नॉस्टैल्जिया.25

सुमित कुमार के नवीनतम चित्रों की एकल कला प्रदर्शनी

11 से 19 फरवरी, 2025

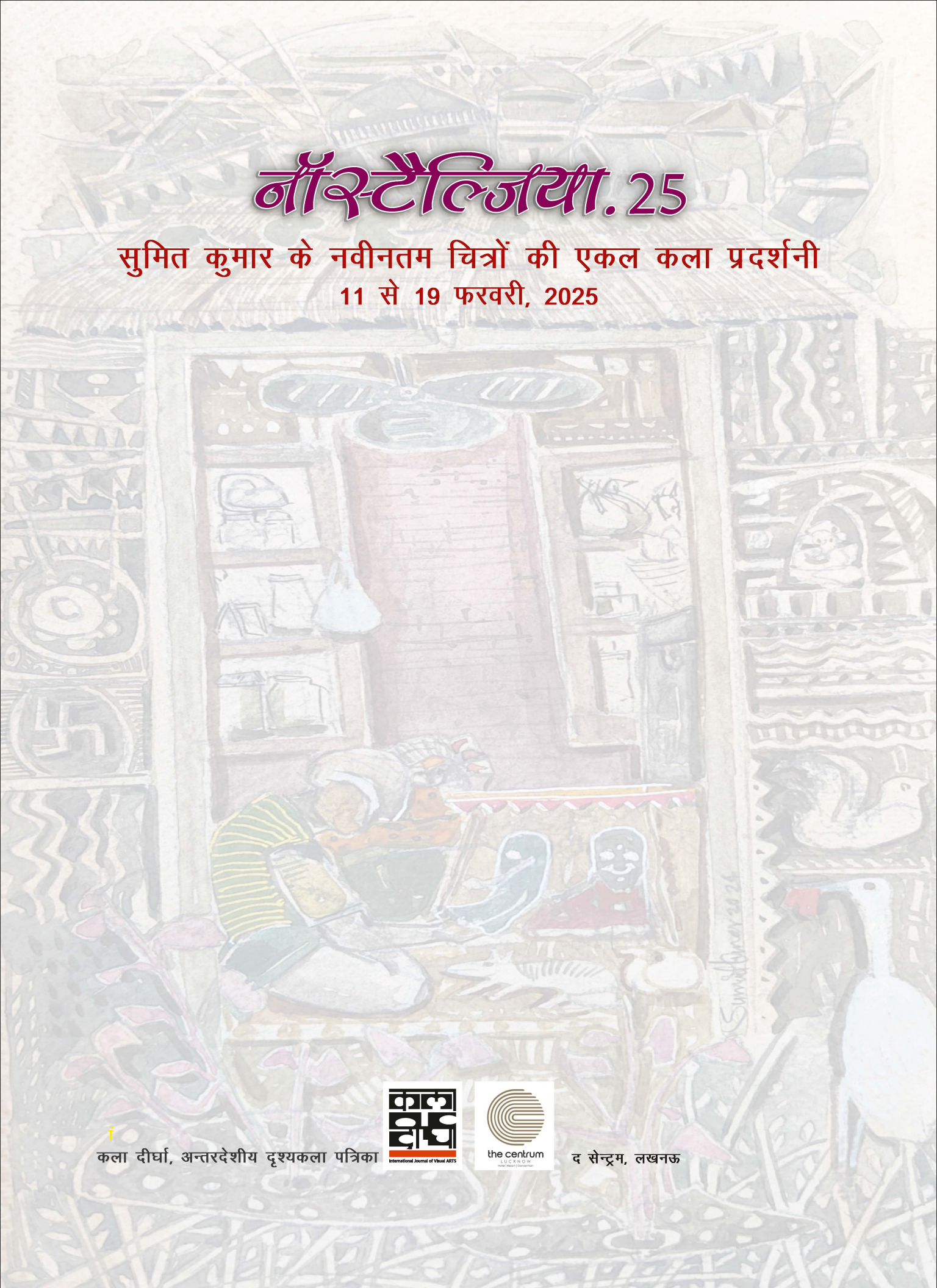

कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका

द सेन्ट्रम, लखनऊ

नॉस्टैल्जिया.25

सुमित कुमार के नवीनतम चित्रों
की एकल कला प्रदर्शनी
11 से 19 फरवरी, 2025

समन्वयक
डॉ. अनीता वर्मा

क्यूरेटर
डॉ. लीना मिश्र

प्रकाशक
कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका
सी-361, राजाजीपुरम्, लखनऊ-226017

नॉस्टैल्जिया.25

सुमित कुमार के नवीनतम चित्रों की एकल कला प्रदर्शनी

11 से 19 फरवरी, 2025

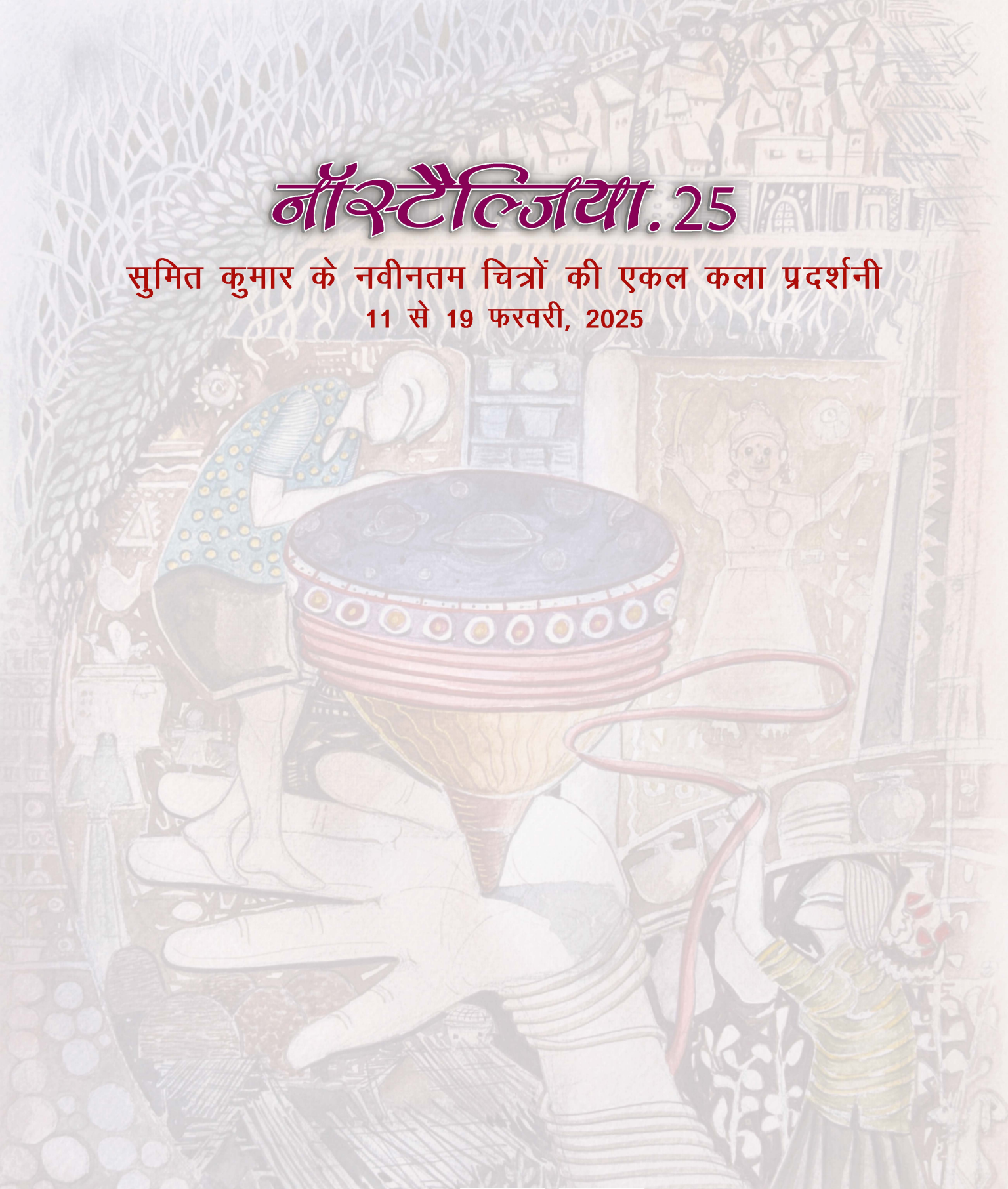

कला दीर्घा, अन्तरदेशीय दृश्यकला पत्रिका

द सेन्ट्रम, लखनऊ

कला दीर्घा
International Journal of Visual ARTS

Dr Leena Misra
MA (Sanskrit, English, Psychology) M Ed, Ph D
Publisher (Honorary)

Kala Dirgha International Journal of Visual Arts
C - 361, Rajajipuram, Lucknow- 226017, Mobile No.: **9415022724**, 9839126836
Email : kaladirgha2000@gmail.com Blog : vizooka.blogspot.com

दिनांक : 11 फ़रवरी 2025

नॉस्टैल्जिया.25

सुमित कुमार की चित्र श्रृंखला

भारतीय संस्कृति के चिंतन, चित्रण और संरक्षण के बहाने आत्मचित्रण करना, विशेषकर अपने ही जिए हुए सुखद पलों को याद करते हुए, वहाँ बार-बार लौटना, समय के उसी परिक्षेत्र और मनःस्थिति में पहुँचना जहाँ से जीवन-यात्रा शुरू हुयी है, एक वृहद और गहरे संदर्भ में विचार करने जैसा है, क्योंकि यह जीवन और उसकी भौतिक, आध्यात्मिक तथा रचनात्मक यात्रा केवल प्रकृति, खेत-बाड़ी, गाँव- गिराँव, नौकरी-चाकरी और दिनचर्या तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक, भौतिक और आर्थिक विविधताओं का एक बड़ा समुच्चय है। भारतीय गाँवों की जीवनशैली में परम्पराएँ, रीति-रिवाज, आध्यात्मिकता, संघर्ष और प्रकृति के साथ गहरे सरोकार दिखाई देते हैं। युवा कलाकार सुमित कुमार अलीगढ़, उत्तर प्रदेश के ऐसे ही एक गाँव से आते हैं जिनके विस्तृत रचनात्मक फलक पर छोटी उम्र की बड़ी यात्रा के पद-चिह्न स्पष्ट देखे जा सकते हैं।

भारतीय ग्रामीण जीवन का सबसे प्रमुख और आकर्षक पहलू उसका भौतिक रूप है। गाँवों में सामान्यत: नदी-नाले, ऊँची-नीची और उपजाऊ-बंजर भूमि, खेत-खलिहान, गोरू-बछरू और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का मानव-जीवन से सीधा सम्बन्ध होता है। यहाँ की अधिसंख्य जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न रहती है, जो उनके जीवन का मुख्य आधार बनता है। घरों की संरचना साधारण और आवश्यकताएं न्यूनतम होती हैं। घर मिट्टी की दीवारों के और छत खपरैल तथा बैठका घास के छप्पर के हुआ करते हैं, हालाँकि वहाँ भी अब शहरी प्रभाव दिखने लगा है, पर सुमित की कला और रचनात्मकता में जो ग्रामीण-जीवन परिलक्षित होता है वह पुराना गाँव ही है, जहाँ एक परिवार की शाखाओं और उपशाखाओं के रूप में एक-दूसरे से जुड़े घर-द्वार या सुकून की तलाश में गाँव से थोड़ा हटकर बना सुन्दर घर फूल-पत्तियों से सजा बगीचा और आसपास के खेतों की सुन्दरता यहाँ के जीवन को समृद्ध करती है। ग्रामीण क्षेत्र में जल की उपलब्धता भी महत्त्वपूर्ण है। अधिकांश गाँवों में नदी, जलाशयों या कुओं से पानी लिया जाता है। सिंचाई की व्यवस्था के लिए नहरें, तालाब, कुएं (रहट) और अब ट्यूबवेल जीवन की सजीवता बनाए रखते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। यहाँ के लोग मुख्यत: धान, गेहूँ, गन्ना, तिलहन की फसलें और फल-फूल की खेती करते हैं जो केवल आजीविका का साधन नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और इससे सम्बन्धित सारी गतिविधियाँ एवं तीज-त्यौहार सब सुमित कुमार की कला में प्रकारान्तर से उपस्थित होते हैं। सुमित का परिवार सनातनी रीति-रिवाजों से गहरे से जुड़ा हुआ है और वह उसी परिवेश में संस्कारित भी हैं, इसीलिए बार-बार, अनेक बार लौटकर भी सुमित न ऊब रहे हैं न अपने कला प्रेमियों को उबा रहे हैं। वह दर्शकों के समक्ष हर बार नवाचार और बालमन के साथ उपस्थित हैं। वह अपने बचपन से बाहर नहीं आ रहे हैं और फिर सही मायने में बचपन छोड़ना भी कौन चाहता है! कोई अपने बच्चों, तो कोई नाती-पोतों में अपना बचपन जीना चाहता है और सुमित अपनी रचनाओं में जीना चाहते हैं, जो सभी आयुवर्ग और रुचिसम्पन्न कलाप्रेमियों को लुभाती है।

देखें तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण समय होता है बालपन और किशोरवय, जहाँ दुनिया देखने की जिज्ञासा और वहाँ स्वयं की उपस्थिति का बहुविधि प्रयास होता है। इसके साथ अपनी स्वाभाविक गतिविधियों तथा परिवेश से जुड़ी संवेदनाओं और स्मृतियों का पिटारा लेकर व्यक्ति अपना वजूद गढ़ता है। ये अनुभूतियाँ और स्मृतियाँ अविस्मरणीय होती हैं, जहाँ व्यक्ति बार-बार जाना और उसे जीना चाहता है। ये अनुभव व्यक्ति के जीवन में परिस्थितिवश आयी नकारात्मकता और अवसाद को तो कम करते ही

हैं, उसे रचनात्मक बनाते हैं, आगे बढ़ने का रास्ता दिखाते हैं और अदम्य इच्छाशक्ति के साथ ही एक अक्षुण्ण ऊर्जा भी देते हैं। ये अविस्मरणीय पल और अनुभूतियाँ अनेक रचनाकारों की कालजयी रचनाओं का विषय-वस्तु बनी हैं। बालपन और किशोरवय की जिज्ञासाओं और अनुभूतियों ने रचनाओं को जीवन्त किया है। अनेक रचनाकारों ने इससे न कि स्वयं की रचनात्मक-धार तेज की है बल्कि रचना-प्रेमियों को भी कुछ समय के लिए ही सही, ऐसे भाव और समय की परिधि में ले जाकर खड़ा किया है, जिसे वे जीवन की आपाधापी में पीछे छोड़ आए थे।

सुमित कुमार एक संवेदनशील युवा कलाकार हैं। वह अपने परिवेश, परम्पराओं और अग्रजों द्वारा दिखाए गये आदर्शों और जीवन-मूल्यों के साथ जीवन जीने की ललक रखते हैं। सुमित ने बचपन और किशोरवय में गाँव का जीवन जिया है। गवईं जन-जीवन और क्रियाकलापों में पूरे उत्साह से भागीदारी की है- खेती-बाड़ी, मचान-खलिहान, मेले-ठेले, बालसखाओं के साथ उछल-कूद और शरारतों का भरपूर आनन्द लिया है, पर अब वह संजीदा हो गये हैं, छूटते जा रहे को पकड़ना चाहते हैं, फिर से जीना चाहते हैं दूर तक फैले दृश्यों – पेड़-पहाड़ और पशु-पक्षियों के संगीत को। गुनगुनाना चाहते हैं वही 'बालराग' बालसखाओं के साथ। तभी तो याद करने लगे हैं उन रंगों को, जो जीवन की आपाधापी में फीके पड़ रहे थे। सुमित ने अपने, या कहें तो हम सब के अतीत को बहुविधि चित्रित किया है, जहाँ स्कूल से बंक मारते बच्चे हैं, टीवी का एंटीना ठीक कर रामायण और महाभारत सीरियल देखते बच्चे हैं, रेडियो पर सदाबहार गाने सुनते, एक-दूसरे का सहारा बने बुज़ुर्ग दंपत्ति हैं, तो पड़ोसी की बाग़ से आम तोड़ने के लिए दोस्त की पीठ पर बैठे बच्चे हैं, भैंस की पीठ पर बैठकर चरवाही करते बच्चे, एक दूसरे को उछालते बच्चे, काठ के घोड़े पर या रेलगाड़ी बनाकर एक दूसरे के पीछे बैठे कई बच्चे, मेले में पिपिहरी बजाते और लट्टू खेलते बच्चे, खटिया बीनता गृहस्थ, साइकिल पर सामान लेकर जाते आदमी के साथ आगे बैठा छोटा बच्चा, बाइसकोप, गुब्बारे और आइसक्रीम वाला, कैंची साइकिल चलाता बच्चा जिसके कैरियर पर उकुड़ूँ बैठा दूसरा बच्चा, हैंडपम्प के नीचे नहाता बच्चा ..... माँ की रसोई हो या पिता की बैलगाड़ी, विदा होती दुल्हन हो या बंदर-बंदरिया का नाच दिखाते मदारी हों या फिर दीवाली में पटाके छोड़ते - छुरछुरिया और चकरघिन्नी जलाते बच्चे हों और भी ऐसे न जाने कितने मन मोह लेने वाले बचपन में जिए गये पल हों, जो हम पीछे छोड़ आये हैं।

सुमित एक रचनात्मक, उत्साही और ऊर्जावान युवा कलाकार हैं जिन्होंने समय की नब्ज को पकड़ा है। वह सबके जीवन को कभी न कभी छुए हुए पलों या सुखद स्मृतियों को विषय बनाकर अपनी प्रस्तुति के नवाचार और मौलिकता के कारण कला-प्रेमियों और कलासंग्राहकों की नज़र में आए हैं। अपनी कृतियों में इन्होंने सतरों के पीछे कई परतों में इबारत लिखी है, जो कला के जानकारों में एक उत्सुकता पैदा करती है। 'नॉस्टैल्जिया.25' चित्र श्रृंखला के गूढ़ार्थ समेटे विषय तो रुचिकर हैं ही, विभिन्न माध्यमों के दक्षतापूर्ण प्रयोग और सतरों के पीछे जाते विषयों की धूमिल होती स्मृतियों को कुरेदना और मन को गुदगुदाना महत्त्वपूर्ण है। इन चित्रों को देखकर याद आती हैं महान कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की ये पंक्तियाँ –

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी। गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिन्ता-रहित खेलना खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद। कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनन्द?

Leena Mishra
(डॉ लीना मिश्र)